Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शुभ विचार सब ओर से आयें

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्-अप्रायुवो रक्षितारो दिवे-दिवे॥

मानव विचारों का पुंज है, विचारों का मूर्तरूप है और विचारों की गठरी है। जैसे विचार होते हैं, वैसी ही आकृति भी होती है। मनुष्य के विचारों की छाया उसके मुख पर देखी जा सकती है। सज्जन-दुर्जन, शिष्ट-अशिष्ट, साधु-असाधु, संयमी-असंयमी, स्वस्थ-अस्वस्थ आकृति से पहचान लिये जाते हैं, अतएव मन्त्र में विचार-शुद्धि पर बल दिया गया है। सद्विचार चारों ओर से हमारे अन्दर आयें। 'बालादपि सुभाषितम्' बालक से भी अच्छी बात ग्रहण करनी चाहिए। बालक भी यदि हितकारी बात कहता है तो उसे अपनाना चाहिए। विचारों का इतना महत्त्व है कि वे वस्तुतः मनुष्य का कायाकल्प कर देते हैं। जैसे विचार मनुष्य में होंगे, वैसा ही वह बन जाता है।

मनुष्य जो कुछ मन में सोचता है, वही वाणी से कहता है। जो वाणी से कहता है, वैसा ही कर्म करता है और जैसे कर्म करता है, उसी प्रकार बन जाता है।

इसलिए विचारों की शुद्धि पर बल दिया गया है। सद्विचार सभी ओर से आवें, यही देवों की कृपा है, यही परमात्मा की कृपा है और यही कल्याण का मार्ग है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोध-कथा

गुरुदेव की ताड़ना कल्याण की इच्छा से

मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी की शिष्यमण्डली में जहां स्वामी दयानन्द थे, वहां उनकी शिष्यमण्डली में नयनसुख नामक एक जड़िया भी था। जैसे स्वामी दयानन्द की स्मरण-शक्ति तीव्र थी, उसी प्रकार नयनसुख की धारणा-शक्ति बड़ी प्रबल थी। वह दण्डी जी की कृपा का विशेष पात्र था, वैसे उसने पढ़ा तो कुछ खास न था, परन्तु जिस समय विद्यार्थीगण अध्ययन करते थे, वह पास बैठा उन्हें ध्यान से सुनता रहता था। अपनी उज्ज्वल मेधा से सुनते-सुनते अष्टाध्यायी और महाभाष्य कण्ठाग्र कर लिये। उसका संस्कृत उच्चारण भी विशुद्ध था। संस्कृत भाषा में बात करने की शक्ति भी उसे मिल गई थी। स्वामी दयानन्द जी से उसे बहुत स्नेह था, वह उनका आदर-सत्कार करता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि अध्ययन कराते दण्डी जी कुछ क्रुद्ध हो गए, उन्होंने कठोर वचन कहते हुए स्वामी जी को एक लाठी लगाई। स्वामी जी पहले की भांति धीरज से पढ़ाई में लगे रहे, परन्तु समीप बैठे नयनसुख जी से न रहा गया। उन्होंने हाथ जोड़ कर विरजानन्द जी से निवेदन किया–"दण्डी जी महाराज, यह दयानन्द जी हमारे समान गृहस्थ नहीं, यह एक संन्यासी है, इनका ध्यान रखना उचित है, न इन्हें अवाच्य कहना उचित है, और न मारना।" दण्डी जी ने नयनसुख जी का वचन स्वीकार किया और कहा–"बहुत अच्छा आगे हम इन्हें और प्रतिष्ठा से पढ़ायेंगे।"

अध्ययन की समाप्ति पर गुरुकुटी से विद्यार्थी जब बाहर निकले, तब दयानन्द जी ने नयनसुख से अप्रसन्नता प्रकट की और कहा–"तुम ने मेरे लिए गुरु जी को क्यों कुछ कहा। उनका हमारे साथ कोई द्वेष तो है नहीं, फिर यदि मारते हैं तो हित बुद्धि से प्रेरित होकर ही मारते हैं। जैसे कुम्हार मिट्टी को पीट-पीट कर उसका एक सुडौल सुन्दर घड़ा बनाता है, ठीक उसी प्रकार श्री गुरुदेव हमारी कल्याण-कामना के वशीभूत होकर ही हमारी ताड़ना करते हैं।"

–नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ४६, अंक २ वार्षिक मूल्य : बीस रुपये सितम्बर १९९६

सम्पा॰ अजयकुमार आ॰ सम्पादक : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

यदि वीर होना चाहो...

—गोपालशरण 'विद्यार्थी'

बी-१२८/१, पूर्वी कैलाश,

नई दिल्ली ११००६५

यदि वीरो अनुष्यादग्निमिन्धीत मर्त्यः।
आजुह्वद्धव्यमानुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम्॥

(सामवेद ८२)

ऋषिः वामदेवः। देवता अग्निः। छन्दः अनुष्टुप्। स्वरः गान्धारः।

१. (मर्त्यः) मरणधर्मा [मनुष्य]

२. (यदि वीरो अनुष्यात्) अगर वीर होना चाहे [मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए]।

३. (अग्निम् इन्धीत) अग्निरूप प्रकाशमान परमेश्वर को अपने अन्दर प्रदीप्त करे [अग्न्याधान करे]।

४. (आजुह्वत् हव्यम् आनुषक्) समर्पित करे [श्रेष्ठ कर्मों की] हवि निरन्तर।

५. (शर्म भक्षीत दैव्यं) प्राप्त दैवी सम्पदाओं/दिव्यताओं द्वारा सेवन करे अलौकिक सुख-शान्ति का।

If a mortal wants to be brave (to defy death), he must illumine himself with the effulgence of Almighty God and remain continuously dedicated for accomplishment of noble tasks and great deeds. Such a person then enjoys eternal bliss through divine affluence.

सामवेद के इस उदात्त मन्त्र में प्रभु भक्ति का सुन्दर आवाहन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
है हम मरणधर्मा मनुष्यों के लिए। मन्त्र का द्रष्टा ऋषि है–'वामदेव'। 'वाम' कहते हैं–सुन्दर, अति शोभनीय को, और 'देव' कहते हैं–'दिव्य गुणों से युक्त महान् विभूति को।' वामदेव ने यह सुन्दरता और दिव्यता प्राप्त की है यज्ञाग्नि द्वारा, यज्ञों द्वारा, (**यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः**–ऋग्० १।१६४।५०)। यज्ञों का यज्ञ से यजन कर, इसीलिए परम्परा से बृहद् यज्ञों, संस्कारों आदि में यज्ञोपरान्त 'महा–वामदेव्यगान' की परिपाटी 'वामदेव' ऋषि के नाम से प्रचलित है।

मन्त्र का देवता है 'अग्नि'। जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है। मन्त्र–द्रष्टा ऋषि वामदेव ने उस अग्निस्वरूप परमेश्वर को धारण करके जो कुछ मन्त्र में व्यक्त किया है, उसके पीछे उसका अपना अनुभव है, साक्षात्कार है। अब यह हमारे और आपके ऊपर निर्भर करता है कि हम ऋषि के अनुभव से लाभ उठायें या न उठायें।

मन्त्र में हम देहधारियों को सम्बोधित किया गया है (मर्त्यः) मरणधर्मा शब्द से। (**जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः**–गीता २।२७) जो पैदा हुआ है, वह मृत्यु को निश्चय ही प्राप्त होगा, इसीलिए हमारी संज्ञा है 'मर्त्यः'। हम सब यह भी जानते हैं कि लोक में जिसे मृत्यु कहते हैं, वह मृत्यु 'शरीर' की होती है, आत्मा तो नित्य है, वह (**ध्रुवं जन्म मृतस्य च**) एक देह छोड़कर दूसरी देह को धारण कर लेता है। पर यह भी निर्विवाद है कि हम सब मरणधर्मा देहधारियों के लिए मृत्यु से बड़ा कोई दुःख नहीं, और मृत्यु से बड़ा कोई भय नहीं। मृत्यु तो वस्तुतः एक प्रक्रिया है, एक सच्चाई है, जिससे सब को एक न एक दिन गुजरना है, परन्तु मृत्यु से बढ़कर है, मृत्यु से जुड़ा हुआ भय और कष्ट। मृत्यु से जुड़ा हुआ भय और कष्ट उस मृत्यु (देहावसान) की घड़ी से भी अधिक पीड़ा और दुःख पहुंचाता है, और आयु–पर्यन्त हम को आक्रान्त एवम् आतंकित किये रहता है। गालिब ने इसीलिए कहा है– मौत का एक दिन मोय्यन है।
नींद फिर रात भर क्यों नहीं आती।।

वेदमाता को शायद यह असह्य है कि उसके पुत्र और पुत्रियाँ मृत्यु के भय और दुःख से इतने आक्रान्त रहें, अतः वेद में कितने ही मन्त्र हैं जिनमें मृत्यु के दुःख से छुड़ाने वाली बड़ी उदात्त प्रेरणाएँ हैं–

मृत्योः पड्वीशमवमुञ्चमानः। –अथर्व ८।१।४
मृत्यु की बेड़ियों को छुड़ा।
त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्ठाः। –अथर्व ८।१।५
मृत्यु तेरी रक्षा करे और तू समय से पूर्व न मरे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत् त्वां मृत्योरपीपरम्। –अथर्व ८।१।१९
मृत्यु से तुझ को ऊपर उठाता हूं।
अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिं। –अथर्व ८।२।२
मृत्यु के बन्धनों और निन्दनीय गति को दूर करता हूं।
मृत्यो मा पुरुषं वधीः। –अथर्व ८।२।५
हे मृत्यु ! तू पुरुष को (समय से पूर्व) मत मार।
तस्मात् त्वां मृत्योर्गोपतेरुद्भरामि स मा बिभेः। –अथर्व ८।२।२३
उस मृत्यु से मैं तुझे ऊपर उठाता हूं। वह तू मृत्यु से मत डर।

किन्तु प्रश्न यह है कि मृत्यु पर विजय प्राप्त करें कैसे? एक बात तो निर्विवाद है कि विजयश्री उनको मिलती है, जो वीर होते हैं, साहसी और निर्भय होते हैं। कायर और डरा हुआ व्यक्ति तो जीते जी मरा हुआ होता है। एक दूसरी सच्चाई यह भी है कि वीर एक ही बार मरता है, जबकि कायर अनेकों बार मरते हैं। Brave die only once, cowards die many times.

बृहदारण्यक उपनिषद् में जो शतपथ ब्राह्मण का ही भाग है, कहा गया है–**'असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमयेति।'**–शतपथ १४।४।१।३०। इसी की व्याख्या में यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि असत् तथा तमसः ही मृत्यु है, और 'सत्' तथा 'ज्योति' ही अमृत है। अन्यत्र भी शतपथ ब्राह्मण में 'अमरत्व' की व्याख्या करते हुए कहा गया है–

–जिसको उस परम ज्योति के दर्शन हो जाते हैं, वह अमर हो जाता है। (यजु० ८।५२, शतपथ ४।६।९।१२)

–जो मर्त्य अपनी समस्त कामनाओं को पूर्ण कर लेता है, वह अमर्त्य हो जाता है। (शतपथ १४।७।२।९)

–अपनी आयु को जीवन्त भोगना अमृत प्राप्त करना है। सौ वर्षों व उससे अधिक का जीवन प्राप्त करना अमृत है। (शतपथ १०।२।६।७)

स्वाभाविक है कि अमृत को 'देव' ही प्राप्त कर सकते हैं। देवता बन कर ही मनुष्य अमरता को प्राप्त करता है। पर कैसे? सामवेद का विचाराधीन मन्त्र इसी मूल प्रश्न का उत्तर है।

(यदि वीरो अनुष्यात्) यदि वीर होना चाहे। मन्त्र का आरम्भ 'यदि' से होता है। इस से दो बातें स्पष्ट होती हैं–

१. देहधारी के अन्दर जो यह जीवात्मा है, वह कर्म करने में स्वतन्त्र है। अर्थात् हम स्वतन्त्र हैं, चाहे हम वीर बनें या न बनें। वीर बनेंगे, तो विधाता उसका फल देगा–वीरभोग्या वसुन्धरा। पृथिवी पर सुखों को भोगेंगे, नहीं बनेंगे, तो उसका फल अलग होगा, जैसा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
भी होगा अपने प्रारब्ध और कर्मानुसार होगा। ''यदि'' शब्द सिद्धान्ततः हमारे कर्मस्वातन्त्र्य का सूचक है।

२. हम जो भी बनना चाहते हैं, उसके लिए हमारे अन्दर उत्कट इच्छा होनी चाहिए। चाहत बहुत जरूरी है। वीर बनने से पहले वीर बनने की चाह होनी चाहिए। जी वही सकता है, जो जीना चाहता है। वीर वही बन सकता है, जो वीर बनना चाहता है। मुख्य बात यह है कि हमारा चिन्तन (thinking) और चाहत (desire) सकारात्मक (positive) होनी चाहिए, क्योंकि जैसा हम सोचेंगे, वैसे ही बनेंगे। As we think so we become.

दूसरा महत्त्वपूर्ण शब्द है (वीरो) अर्थात् वीरोचित गुण। वीरता के लिए शारीरिक बल इतना जरूरी नहीं, जितना जितेन्द्रिय, चरित्र और आत्मिक बल का होना महत्त्वपूर्ण है।

सुबुद्धि, श्रद्धा, संकल्प-शक्ति, धैर्य, उत्साह, साहस, वचनबद्धता, कर्मठता, कार्य-कुशलता, नीतिज्ञता, दक्षता आदि अनेक गुणों से विभूषित होता है वीर। पर वीरता और शौर्य कोई ऐसी वस्तुएं नहीं हैं, जिन्हें बाजार में खरीदा जा सके। इसके लिए इन्द्रिय-बल और आत्मबल (शारीरिक, चारित्रिक और आत्मिक बल) तीनों को प्राप्त करना जरूरी है।

चलिए, हमने निश्चय कर लिया कि वीर बनेंगे। अमृत को प्राप्त करेंगे। संसार में अपना नाम, अपना यश, अपनी कीर्ति अमर कर जायेंगे। अब क्या करें?

मन्त्र कहता है—(अग्निम् इन्धीत) अग्नि को अपने अंदर धारण करो। अपने अन्दर आग्न्याधान कर अपने अन्दर अग्नि को प्रदीप्त करो। जब अन्दर आग धधक रही होती है, तब जन्म होता है वीरता का।

कौन धारण कर सकता है अग्नि को अपने अंदर? कभी आपने अग्नि-होत्र करते समय आग्न्याधान के मन्त्र पर विचार किया है?

ओ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥

—यजु० ३।५

हे (भूः भुवः स्वः) सच्चिदानन्दस्वरूप परमेश्वर। (द्यौ इव भूम्ना) द्यौ के समान महानता से (पृथिवी इव वरिम्णा) पृथिवी के समान वरणीयता से, युक्त होकर (देवयजनि पृथिवी) देव यज्ञ की आधार भूमि पृथिवी (तस्यास्ते पृष्ठे) उस तेरे पृष्ठ पर (अन्नादम् अग्निम् अन्नाद्याय) भौतिक अग्नि को अन्न आदि भौतिक पदार्थों के सेवनार्थ (आ दधे) धारण करता हूं।

देखो ! भौतिक अग्नि को भौतिक सम्पदाओं की प्राप्ति के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हेतु पृथिवी पर धारण करने के लिए अग्निहोत्र करने वाले में न्यूनतम दो योग्यताओं का होना जरूरी है, (१) द्यौ के समान महानता, और (२) पृथिवी के समान वरणीयता। सोचो, जहां यज्ञ वेदि हृदयतल हो, अग्नि अभौतिक अर्थात् अग्रणी परमेश्वर हो, और लक्ष्य भी अभौतिक (दैवी) सम्पदा (जैसे वीरता आदि) को प्राप्त करना हो, वहां यज्ञकर्ता के अन्दर मात्र अग्निहोत्र की तुलना में कितनी अधिक न्यूनतम योग्यताएं चाहिए होंगी। यह है, विचारणीय बात।

एक और बात। अग्नि का गुण है तपाना। (**सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमामृजूयमानो अतपन्महित्वा**–ऋग्० १०।८८।९) अग्निहोत्र में पृथिवी और द्यौ अपनी महित्वा/क्षमता के कारण भौतिक अग्नि की तपन को सह लेते हैं। क्या हमने अपने आप को तैयार किया है कि परमेश्वर हमारे अन्दर प्रदीप्त होकर जब हमें तपाना चाहे, हम तपने को तैयार हैं? इतिहास साक्षी है कि जिन्होंने भी परमेश्वर को अपनाया है जीवन भर उनको तपना पड़ा है, तब जाके वे कुन्दन बने हैं, और इतिहास में उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है। प्रभु-भक्तों को जितनी परीक्षा देनी पड़ी है, जितने संघर्षों से जूझना पड़ा है, जितनी आपदाएं झेलनी पड़ी हैं, उतनी अन्यों को नहीं। (अग्निम् इन्धीत) अग्निस्वरूप परमेश्वर को अपने अन्दर धारण करने के लिए कदम-कदम पर अग्नि-परीक्षा देने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। इसीलिए मन्त्र का आरम्भ 'यदि' से है। जो अग्नि-परीक्षा से हार गया या घबड़ा गया, वह 'वीर' तो होने से रहा। तो यदि वीर होना है, अमरत्व को प्राप्त करना है, तो अग्नि को अपने अन्दर धारण भी करना पड़ेगा, और अग्नि-परीक्षा भी, जब भी प्रभु चाहें, देनी पड़ेगी।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 'मन', 'वाक्', 'प्राण', 'चक्षु' और 'श्रोत्र' वे क्षेत्र हैं जहां अग्न्याधान करना है। मन हृत्प्रतिष्ठ है। यही हमारे चिन्तन, मनन, संकल्प, विकल्प का केन्द्र है। मन में परमेश्वर को धारण करने का अर्थ है दिव्य चिन्तन, शुभ संकल्प तथा शुभ और श्रेष्ठ कार्य। वाणी में अग्न्याधान का अर्थ है, वाणी से निरन्तर प्रभु की स्तुति, उसकी महिमा का गुणगान और भद्र भाषण। प्राण में अग्न्याधान है प्राणायाम द्वारा परमेश्वर के भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य स्वरूप को धारण करना। चक्षु में अग्न्याधान है, सृष्टि में स्रष्टा की विलक्षणता एवं कार्य-कुशलता का दर्शन। 'श्रोत्र' का अग्न्याधान परमेश्वर की कल्याणी वाणी का श्रवण और निदिध्यासन।

'**अग्निम् इन्धीत**' अर्थात् अग्न्याधान के बाद अगली चीज है (**आजुह्वत् हव्यम् आनुषक्**) निरन्तर हवि की समर्पण की भावना से आहुति। सामान्य अग्निहोत्र में भी प्रदीप्त अग्नि मन्द हो जाती है, यदि

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निरन्तर समिधा, घृत तथा हव्य पदार्थों की आहुति न दी जाये। 'समिधा', 'घृत', 'हव्य-पदार्थ' तीनों की कुछ विशेषताएं हैं जो अग्निहोत्र की सफलता के लिए आवश्यक हैं। वृक्षों की सूखी टहनियां, जो स्वतः सूख कर गिर पड़ती हैं, अग्निहोत्र के लिए उपयुक्त समिधा हैं। समिधा के लिए वृक्षों को काटना/चीरना ठीक नहीं। समिधा गीली, दागी, घुनी या मलिन नहीं होनी चाहिए। घृत, गो-दुग्ध से विधिपूर्वक बना, छना, तपा तथा केशरयुक्त होना चाहिए। हव्य-पदार्थ केवल वही होने चाहिएं जो सुगन्धिकारक, पुष्टिकारक, मिष्ट तथा मधुर और रोग, कीटाणु, प्रदूषण-निवारक हों, तथा जिनका चयन ऋतु-अनुसार शुद्धता एवं पवित्रता के आधार पर किया गया हो। अग्निहोत्र में जब उपरोक्त प्रकार की हवियां दी जाती हैं, तब अग्नि हव्य-वाहन बनकर सम्पूर्ण वातावरण को अत्यन्त शुद्ध, निर्मल, सुखदायक और यज्ञमय बना देती है।

पर मन्त्रानुसार, जो अग्नि हमने अपने अन्दर प्रदीप्त की है, उसमें हम कौन सी हवि डालेंगे? यहां हवियाँ हैं, हमारे कर्म, सुन्दर, श्रेष्ठतम कर्म, जिनसे हमने अपने अन्दर की अग्नि को प्रदीप्त रखना है। सुन्दर, श्रेष्ठतम कर्मों के साधन भी समिधा की तरह शुद्ध और पवित्र होने चाहिएं। घृत प्रतीक है स्निग्धता का, उत्कट प्रेम, निष्ठा और भक्ति का। कर्त्तव्य के प्रति, शुभ और श्रेष्ठ कर्मों के प्रति, हमारी निष्ठा, हमारी भक्ति, हमारी लगन अटूट होनी चाहिए। (**घृतं तीव्रं**—यजु० ३।२) साथ ही साथ यह तीव्र भी होनी चाहिए। शुभ और श्रेष्ठ कर्मों में ढिलाई कभी अच्छी नहीं होती। अन्तिम बात यह कि हमारे समस्त कर्म सुगन्धिकारक, पुष्टिदायक, मिष्ट और रोग, कीटाणु, प्रदूषण-निवारक होने चाहिए। सभी कर्म, चाहें वे व्यक्तिगत हों, पारिवारिक हों, सामाजिक हों, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हों, उपरोक्त कसौटियों पर खरे उतरने चाहिएं। 'अग्नि' मात्त्विकता का प्रतीक है, ऊर्ध्वगामी है, अग्रणी, अर्थात् आगे ले जाने वाला है, विकास-वाहन है। अन्धकार और अपवित्रता को दूर करने वाला है। ज्ञान प्रकाश और पवित्रता को देने वाला है। (**'अग्नये जातवेदसे'**—यजु०३।२) अग्नि ही जातवेदस् है। इस अग्नि का जितना-जितना वर्धन होता जाता है, उतना ही हमारा अग्निहोत्र सफल होता जाता है। इसी प्रकार जितनी-जितनी हमारी प्रभु से सामीप्यता बढ़ती जाती है, 'अन्तरात्मा' 'अन्तर्यामी' का साक्षात्कार करता जाता है, वह अन्तर्यामी के गुणों से विभूषित होता जाता है। (**यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय ऋतेपा ऋतेजाः**—ऋग्० ७।२०।६) जो यज्ञों (श्रेष्ठतम कर्मों) द्वारा इन्द्र परमेश्वर की सेवा-पूजा समर्पित भाव से अर्पण करता है, वह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋतेपा और ऋतेजा ऐश्वर्यों को, सम्पदाओं को बसाता है। (**इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन् भर्गो यशः सह ओजो वयो बलम्।** अथर्व० १९।३७।१) और उस अग्निस्वरूप परमेश्वर से प्रदत्त यह वर्चः समर्पण-कर्त्ता को भर्ग (तेज), यश, सह (शत्रुधर्षक बल), ओज, दीर्घ आयु और वीरता के रूप में प्राप्त होता है।

इसी वीरता के फलस्वरूप मरणधर्मा मनुष्य विजय प्राप्त करता है, मृत्यु के भय और दुःखों पर। आयु-पर्यन्त (शर्म भक्षीत दैव्यं) अग्नि-देव परमेश्वर से पाये हुए अलौकिक सुख और शान्ति का सेवन करता है। प्रभु से प्राप्त अलौकिक सुख और शान्ति ही परमानन्द है, मोक्षानन्द है। भौतिक अग्नि जिस प्रकार भक्षण करने योग्य अन्न व व्यवहार योग्य ऊर्जा को प्राप्त कराती है उसी प्रकार अग्निस्वरूप प्रकाशमान परमेश्वर देव से महान् दैवी सम्पदाएं प्राप्त होती हैं, जो वीरता की पहचान होती हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में ऐसी छब्बीस दैवी सम्पदा गिनाई गई हैं। यह हैं—अभय, अन्तःकरण की शुद्धता, ज्ञान तथा योग में विशेष स्थिति, दान, दम, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, सरल स्वभाव, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, अपैशुन (चुगली न करना), दया, अलोलुपता (लोभ का त्याग), मृदुता, व्यर्थ की चेष्टाओं में अरुचि, अचपलता (स्थिरता), तेज, क्षमा, धृति, पवित्रता, अद्रोह, और निरभिमानिता। ऐसा नहीं है कि सच्ची वीरता के यह छब्बीस ही लक्षण हैं, परन्तु इन से अन्य लक्षणों का भी बोध हो सकता है। (**दैवी सम्पद् विमोक्षाय**'—गीता १६।५) दैवी सम्पदा ही बन्धनों से छुड़ाने वाली तथा मोक्षप्रदाता है।

अग्निहोत्र की मूल भावना है, समर्पण। इसी प्रकार मनुष्य जब पूर्णतया अपने आप को इस परमेश प्रभु के अर्पण कर देता है, प्रभु की इच्छा ही उसकी इच्छा हो जाती है, प्रभु का कार्य ही उसके लिए प्रभु की पूजा हो जाती है। वह न केवल भय और दुःखों पर विजय प्राप्त कर लेता है, वरन् प्रभु से प्राप्त दैवी सम्पदाओं सहित उस अलौकिक आनन्द का भी सेवन करता है, जिसको मोक्षानन्द कहते हैं। यही इस मन्त्र का आशय है।

मनुष्य को यदि हो जीतना,
दुःखों को, भय को और मृत्यु को।
धारण करे वह दिव्य अग्नि को,
कर दे आहुत निज जीवन को।।
मनुष्य बने तब वीर साहसी, सेवन करे सुख-आनन्द।
प्रभु सेवा बन जाये परम-धर्म, भोगे दिव्य मोक्षानन्द।।

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्तमान राजनीति के परिप्रेक्ष्य में : अश्वमेध-विमर्श

—डा० मिताली देव
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
संस्कृत विभाग, कला संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

अश्वमेध : आधुनिक महानिर्वाचन अथवा मध्यावधि चुनाव

स्वतन्त्र भारत की राजनैतिक उपलब्धियों में प्रजातान्त्रिक प्रणाली एक महत्त्वपूर्ण मानदण्ड है। इस प्रणाली का हृदय 'निर्वाचन' है। सामान्य परिस्थितियों में प्रति पाँच वर्ष के समयान्तराल में लोकसभा विधानसभा आदि प्रतिनिधि सभाओं का निर्वाचन होता है। यह भारत की राष्ट्रीयता प्राप्त नागरिक अधिकार से सम्पन्न होता है।

कुछ परिवर्तनों के साथ यही निर्वाचन-प्रणाली राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यसभा, विधानपरिषद्, नगरपालिका, नगरमहापालिका, नगरनिगम, ग्रामसभा आदि विभिन्न संस्थाओं के अध्यक्ष, उपाध्यक्षादि के निर्वाचन में भी स्वीकृत है। लोकसभा और विधानसभा--ये दोनों शासन के अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ हैं। इनमें जनता का साक्षात् प्रतिनिधित्व स्पष्ट होता है। प्रति पाँच वर्ष के अन्तराल में जनता के समक्ष निर्वाचन प्रक्रिया द्वारा अपने बहुमत की स्थिति स्पष्ट कर किसी दल के द्वारा शासनसूत्र संभाला जाता है।

विशेष परिस्थितियों में मध्यावधि चुनाव

कभी भी शासक दल के नेता को अपने बहुमत अथवा अपने प्रति समर्थन में संदिग्धता हो, तो वह मध्यावधि निर्वाचन के द्वारा पुनर्बहुमत रूप जनादेश प्राप्त कर सत्तासीन हो सकता है। यह प्रक्रिया केन्द्र, केन्द्रशासित राज्य में एक साथ या पृथक्-पृथक् सम्भव है। इस प्रजातान्त्रिक पद्धति में शासनाधिकार प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ एवं शान्तिप्रिय योजनाबद्ध विधि है। वर्तमान समय में भारतसंघ सहित विश्व के अनेक प्रजातन्त्रवादी देशों में यह प्रक्रिया प्रचलित है।

अश्वमेध यज्ञ और उक्त विचार की प्रासंगिकता

वस्तुतः विचार करने पर उक्त समस्त प्रक्रिया राष्ट्र में स्थिर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
शासन की आधारशिला को दृढ़ करने का ही प्रजातान्त्रिक उपाय है। अल्पमत शासन सदा अस्थिर होता है। विचार करने पर यह ज्ञात होगा कि अश्वमेध महायज्ञ की अनेक उपलब्धियों में यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यथा–

अश्वमेध और वर्तमान सन्दर्भ :

अवश्य ही वर्तमान समय में राजनीति एवं धर्म का स्वतन्त्र अर्थात् पृथक्-पृथक् एक दूसरे से असम्पृक्त स्वरूप प्राप्त होता है, परन्तु आर्ष सिद्धान्तानुसार राजनीति और धर्म एक दूसरे के पूरक हैं। अतः अश्वमेधयज्ञ मात्र एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, अपितु उसका एक राजनीतिक स्वरूप भी है। प्रसिद्ध है **''राजनीतिर्महालक्ष्मीर्धर्मो नारायणस्स्वयम्''।**

वस्तुतः राजनीति और धर्मनीति का व्यावहारिक समन्वय ही वह सुदृढ़ आधारशिला है, जिस पर जन्मप्रभृति उत्तरदायित्वमूलक आनुवंशिक स्थिर शासन-पद्धति का महाप्रासाद स्थापित होने पर विजय-वैजयन्ती चिरकाल स्थापित रहेगी। राजनीति की प्रधान दुर्बलता अस्थिरता है। राष्ट्रविप्लव, राजद्रोह, सैन्यविद्रोह, चौर्यवृत्ति, कूट-सन्धि, कपटाचार आदिं समस्त शासन के विध्वंसक तत्त्वों का मूल है--अस्थिर शासन।

स्थिर शासन की स्थापना हेतु राष्ट्रनायक को स्वत्व समर्पण करना अनिवार्य है। किसी भी राष्ट्र को ध्वंस करने का परोक्ष मन्त्र है–''उस राष्ट्र में अस्थिरता उत्पन्न करना''। अश्वमेध महायज्ञ उक्त समस्या का ही स्थायी एवं सुदृढ़ समाधान है।

इस प्रकार यह सिद्ध है कि अश्वमेध महायज्ञ मात्र यजमान और पुरोहित का एक धार्मिक गृह कृत्य नहीं है, अपितु जन्मप्रभृति आनुवंशिक उत्तरदायित्वपूर्ण आर्य साम्राज्य परम्परा के उपलब्धि स्वरूप शासन-स्थापना की आधारशिला है। वर्तमान सन्दर्भ में अश्वमेध यज्ञ एक दीर्घकालिक राष्ट्रीय परियोजना है।

अश्वमेध यज्ञ द्वारा राजनैतिक एकता :

राजनीतिक स्वरूप की उपलब्धि का मूल मन्त्र है–''शासन में अपरिवर्तनीय एकात्मता का सातत्य'' जब पृथ्वी पर अनेक छोटे-छोटे राज्य होंगे तभी व्ययभार अधिक होगा। परस्पर विजिगीषा, प्रति-स्पर्धामूलक युद्ध, सेना निवेश, गूढ़ अभिसंधि, कूट प्रयोग इत्यादि होने से अस्थिरता उत्पन्न होगी जो कि राष्ट्रध्वंस का पर्याय है। परन्तु जब अश्वमेध यज्ञ के माध्यम से समस्त विश्व में राजनीतिक एकता का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यावहारिक स्वरूप स्थापित होगा, तब एक राष्ट्र नायक के एक ध्वज की स्थापना के द्वारा विश्व में "**वसुधैव कुटुम्बकम्**" स्थापना करेगा।

१. सम्राट् अभिषिक्त होने पर अपने आनुवंशिक जन्मप्रभृति उत्तरदायित्व के रक्षार्थ विश्व एकता की अपेक्षा करता है, जिसकी पूर्णता अश्वमेध जैसी दीर्घकालीन परियोजनाओं में स्पष्ट है।

२. अश्वमेध महायज्ञ जैसी राष्ट्रीय परियोजना के द्वारा विश्वशान्ति के विरुद्ध सन्नद्ध या सम्भावित समस्त विद्रोहों का शासन होता है।

३. एकता का मूलभूत तत्त्व स्वमित्र संख्याओं में वृद्धि है, नीतिकारों ने स्पष्ट कहा है–"**यानि कानि च मित्राणि, कर्तव्यानि शतानि च**"।[२]

अश्वमेध परियोजना से उक्त कार्य की स्थायी स्थिति सम्भव है। आन्वीक्षिकी स्थापना, नीतिस्थापना, वार्ता-दण्डनीतिस्थापना, आमात्यमन्त्री-नियुक्ति, गूढ़प्रयुक्ति, चारसन्निवेश (सी.आई.डी.), मन्त्राधिकार, प्रणिधिविचार, उत्तराधिकार सुरक्षा, राजप्रणिधि, निशान्त-प्रणिधि, आत्मरक्षितप्रयोग, जनपदनिवेश, सन्निधातृनिचय, समाहर्तृसमुदयप्रस्थापन, अक्षपटल में गाणनिक्याधिकार, समुदययुक्तापहृत का प्रत्यानयन आदि अर्थशास्त्रीय विषयों की स्थायी स्थिति भी स्थिर शासन में सम्भव है।[३]

उदाहरणार्थ सम्प्रति कभी राष्ट्रीय अस्थिरता होने पर शासन लोकसभा भंग कर पुनः महानिर्वाचन सम्पन्न कर बहुमत प्राप्त कर, स्थायित्व के आधार पर शासन सूत्र संभाल सकता है, उसी प्रकार जन्मप्रभृति आनुवंशिक उत्तरदायित्वपूर्ण शासन व्यवस्था में भी कभी राष्ट्रीय विप्लव अथवा सामन्तवादियों का विद्रोह, गृहकलह, अधिकारी वैमत्य आदि अस्थिर स्थिति उत्पन्न होने पर, सम्राट् द्वारा अश्वमेध योजना सम्पन्न कर राष्ट्र में स्थिरता स्थापित की जा सकती है।

जन्मप्रभृति उत्तरदायित्वपूर्ण आनुवंशिक शासन-व्यवस्था में शान्तिस्थापनादि अन्य शासन-पद्धतियों की अपेक्षा कुछ अधिक समय के लिए सम्भावित होने पर भी चिरकालिक नहीं हो सकती है। अतः एक सम्राट् के सेवानिवृत्त[४] होने पर युवराज अभिषिक्त होकर सम्राट् होगा। वह पुनः अश्वमेधमहायोजना द्वारा उक्त व्यवस्था को स्थायी रूप से स्थापित करेगा। इस प्रकार प्रयोजनानुसार एक सम्राट् अधिकारी एकाधिक अश्वमेधों[५] की आयोजना कर सकता है। दशाश्वमेध -शताश्वमेध आदि इसी व्यवस्था के बृहद् रूप हैं।

जिस प्रकार प्रजातान्त्रिक पद्धति में शासनव्यवस्था की एक निश्चितकालीन स्थिरता के सम्पादन के लिए महानिर्वाचन एवं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai.
परिस्थितिविशेष में मध्यावधि निर्वाचन वर्तमान भारतीय संविधान स्वीकृत है, उसी प्रकार जन्मप्रभृति उत्तरदायित्वपूर्ण आनुवंशिक स्थायी शासन-व्यवस्था में दीर्घकालीन स्थिरता लाने के लिए अश्वमेध महायज्ञ रूप राष्ट्रीय परियोजना, आर्ष संविधान अर्थात् वेदानुमोदितविधि स्वीकृत है।

---

१. द्र० हितोपदेश मित्रलाभ प्रकरण।

२. द्र० हितोपदेश मित्रलाभ प्रकरण।

३. द्र० कौटिल्य अर्थशास्त्र।

४. ''सेवानिवृत्तिकालस्तु साम्प्रतं-सर्वत्र प्रायो विवादास्पदम्। नेतृणां तु निश्चयाभाव एव परं जन्मप्रभृत्युत्तरदायित्वपूर्णाऽनुवंशिकस्थायित्व-सम्पादकशासनव्यवस्थायां नियुक्तिस्तु आपञ्चविंशात् आपञ्चाशत् इति सार्वजनीनो नियम आसीत्। तत्फलं तु तत्र निर्जीविकसमस्याभावः तथा च प्रसिद्धिः-पञ्चाशोर्ध्वे वनं व्रजेत्''।

तथा च स्मृतिः-

''गृहस्थस्तु यदा पश्येद् वलीपलितमात्मनः।
पुत्रेषु भार्यां निक्षिप्य वनं गच्छेत् सहैव वा।।''

५. ''त्रीन् मेधान् आहरिष्यति।''
द्र० महाभारत आदिपर्वे, अर्जुनजन्मप्रसङ्गः।

New Publications

by SWAMI VIDYANAND SARASWATI

ON THE VEDAS (A clue to the understanding of the Vedas)	35.00
Aryavarta (The original habitat of the Aryans)	55.00
Dayananda (Architect of modern India)	75.00

VIJAYKUMAR GOVINDRAM HASANAND

4408, NAI SARAK, DELHI-6

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक धर्म सम्बन्धी कुछ श्रेष्ठ प्रकाशन

लेखक : प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
वेद सदन, अबोहर-१५२११६

गोविन्दराम हासानन्द ने श्री पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार की सुप्रसिद्ध कृति ब्रह्मचर्य-सन्देश पुनः प्रकाशित करके एक उत्तम कार्य किया है। मूल्य भी २५.०० बहुत उचित रखा है। पुराने स्वाध्यायशील लोग इस विख्यात पुस्तक से परिचित हैं तथापि जन-जन की प्रेरणा के लिए मैं कुछ विशेष कारणों से इस पर लिखने लगा हूँ।

महर्षि दयानन्द की मौलिक व ठोस देन क्या-क्या थीं, इस पर विचार करें तो **'ब्रह्मचर्यसन्देश'** ऋषि की एक जीवन-संचार करने वाली घोषणा व देन है। गोविन्दराम हासानन्द द्वारा प्रकाशित **'ऋषि-बोध-कथा'** पढ़िये। स्वामी वेदानन्द जी को राजा जयकिशनदास ने कहा था कि ब्रह्मचर्य पर जैसा महर्षि बोलते थे, वैसा फिर हम ने कोई और नहीं देखा। देवेन्द्र बाबू जी के भी कुछ ऐसे ही भाव थे। ऋषि ने ब्रह्मचर्य की एक लहर चलाई। इसको एक विराट् आन्दोलन का रूप प्रतापी श्रद्धानन्द व महान् दर्शनानन्द ने दिया। सत्यव्रत जी की इस पुस्तक ने ऋषि के इस सिंहनाद को दूर-दूर तक पहुंचा दिया।

कर्नाटक से एक 'ब्रह्मचर्य' नाम से एक अंग्रेजी मासिक निकलता था। इस पर सीधी स्वामी श्रद्धानन्द जी की छाप थी। यह पत्र प्रत्यक्ष रूप से आर्यसमाजी नहीं था। कांगेरी कर्नाटक में एक गुरुकुल स्थापित हुआ था। आज नहीं है। यह भी आर्यसमाज की संस्था नहीं थी परन्तु ऋषि के ब्रह्मचर्य-सन्देश का ही यह चमत्कार था। तमिलनाडु में भी गुरुकुलम् स्थापित हो गया। वहाँ भी ब्रह्मचर्य-सन्देश पहुंचा। जहां-जहां समाजसेवी, 'देशसेवक और स्वतन्त्रता सैनिक हिन्दी जानते थे सब ने सत्यव्रत जी का ब्रह्मचर्य-सन्देश स्वातन्त्र्य पूर्व काल में पढ़ा था। मैं जब कालेज में पढ़ता था तब यह ग्रन्थरत्न बाजार में नहीं मिलता था। मैं इसे पढ़ने के लिए तड़पता तरसता था। यत्न करने पर भी न मिला।

तब 'वैदिक सिद्धान्त' एक पुस्तक में सत्यव्रत जी का एक निबन्ध पढ़कर तृप्त हो गया। वह इसी ग्रन्थ का सार था। इसे पढ़कर दुराचार अनाचार से घृणा व सदाचार संयमपूर्वक जीवन बिताने की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक ललक पैदा होती है। यह पुस्तक उनके लिए बहुत उपयोगी है जो कुछ बनना चाहते हैं या अपनी सन्तान को बुराई से पतन की खाई से बचाना चाहते हैं। हम ने ग्रामों में वेद प्रचार-मण्डल की ओर से युवकों में इसके प्रचार का कुछ अभियान चलाया है।

सन्ध्या क्या ? क्यों ? व कैसे ?

पूज्य पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने सन्ध्या पर दो पुस्तकें लिखीं। दोनों पठनीय हैं। यह उनकी अन्तिम दिनों की रचना है। यह पहले क्रमशः उर्दू में छपी थी। पूज्य उपाध्याय जी ने स्वयं ही इसका हिन्दी अनुवाद किया था। मन्त्रों की व्याख्या में मौलिकता व रोचकता है। सन्ध्या क्यों करें? आस्तिक जीवन की श्रेष्ठता आस्तिकवाद की अमर कृति के लेखक की लेखनी से पढ़ने योग्य है। इस एक पुस्तक का पाठ करने से हृदय पर वैदिक धर्म की श्रेष्ठता की छाप लग जाती है। श्री पं० चमूपति जी का 'सन्ध्या रहस्य' मैंने विचार-वाटिका प्रथम खण्ड में दिया है। पं० चमूपति जी की सन्ध्या की व्याख्या और उपाध्याय जी की यह कृति अपने विषय की अनूठी पुस्तकें हैं। पुराने आर्यसंन्यासी, विद्वान् व शास्त्रार्थ महारथी सन्ध्या, वैदिक ईशोपासना की विशेषता पर बहुत प्रभावशाली व्याख्यान दिया करते थे।

अमर कथा धर्मवीर पं० लेखराम

यह पुस्तक रक्तसाक्षी पं० लेखराम जी के जीवन व बलिदान पर लिखना वैसा कार्य नहीं जैसा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज व अन्य हुतात्माओं पर लिखना है। पं० लेखराम जी ने आयु तो थोड़ी पाई परन्तु उनका जीवन बड़ा घटनापूर्ण था। उन पर आर्यसमाज में एक ही काम की पुस्तक छपी और वह था स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज लिखित उनका जीवनचरित। सन् १९५४-५५ तक वे लोग जीवित थे जिन्होंने अमर धर्मवीर के दर्शन किए थे। तब तक पण्डित जी के साहित्य के कई मर्मज्ञ विद्वान् जीवित थे। मैंने पं० लेखराम जी के वैदिक-धर्मी बनने से लेकर उनके बलिदान तक और १९५४-५५ तक की पत्र पत्रिकाओं का ५० वर्ष तक गम्भीर अध्ययन किया और पं० लेखराम जी की हत्या का षड्यन्त्र रचने वाले मिर्जाई पंथ की सैकड़ों पुस्तकों व अल्फजल आदि पत्रिकाओं की फाईलें, मुसलमान व ईसाई सिख मित्रों का पण्डित जी से सम्बन्धित साहित्य पढ़कर पण्डित जी पर यह तीसरी पुस्तक लिखी है।

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पण्डित जी के जीवन की तो नई-नई घटनाएं इसमें पढ़ने को मिलेंगी ही साथ ही विरोधियों के आक्षेपों का सप्रमाण उत्तर देकर उनकी अच्छी खबर ली और दी गई है। मुझे विश्वास है कि मेरी यह कृति बार-बार छपेगी।

वेदपाठ

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि पूज्यपाद स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ के स्वाध्याय-सन्दोह, स्वाध्याय-सुमन आदि ग्रन्थरत्नों से आर्यसमाज में वेद के स्वाध्याय व वेद-प्रवचनों की लोकप्रियता बढ़ी। प्रस्तुत पुस्तक श्री स्वामी जी महाराज द्वारा संगृहीत कुछ वैदिक सूक्तियों का संग्रह है। मुनिवर गुरुदत्त संस्थान हिण्डौन सिटी ने इसे जिस शान व श्रद्धा से प्रकाशित किया है इसकी वेद-भक्तों में सर्वत्र प्रशंसा होगी। यह एक नया कीर्तिमान है। ❐❐❐

नये प्रकाशन

१. ऋग्वेद-संहिता (मूल)	३००.००
२. आर्यसमाज : एक चिन्तन	१२५.००
३. उपनिषदों की कथाएँ (डॉ० भवानीलाल भारतीय)	५०.००
४. ऋषि दयानन्द कीर्तिगान (पं० नारायणप्रसाद बेताब)	८.००
५. जीने का सही ढंग (प्रेरक बोधकथाएँ)	८.००
६. सच का फल (उपनिषदों की कथाएँ)	८.००
७. बाल जीवन-सोपान (स्वामी ब्रह्ममुनि)	१४.००
८. भगवत् कथा (गंगाप्रसाद उपाध्याय)	१४.००

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विकासवाद

आधुनिक काल में विकासवाद एक महत्त्वपूर्ण विचारधारा है। वैज्ञानिक और ऐतिहासिक दोनों ही क्षेत्रों में उसका प्रवेश हो गया है। वैज्ञानिक विचारधारा में प्राणियों की विभिन्न जातियों की उत्पत्ति में विकासवाद को मान्यता प्रदान की जाती है और ऐतिहासिक विचारधारा में मानवी बुद्धि के विकास अथवा ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धि में विकासवाद को आधार माना जाता है। साधारण दृष्टि से देखने पर यह बात ठीक-सी प्रतीत होती है, परन्तु गहराई से विचार करने पर इसका खोखलापन स्पष्ट हो जाता है।

विकासवाद के अनुसार प्राणी अथवा जीवन-तत्त्व का प्रथम आविर्भाव जलों में उद्भिज्ज के रूप में हुआ। पहले जल-वायु-मिट्टी आदि के संसर्ग से एक प्रकार की सूक्ष्म काई बनी। उसी से पुनः जलवायु का विलक्षण प्रभाव प्राप्त कर समस्त जलीय तथा पृथिवी के तृण, वीरुध, लता, गुल्म, ओषधि, वनस्पति तथा विविध वृक्ष आदि का क्रमशः विकास हुआ। कालान्तर में इसी मूल जीव-बीज से सर्वप्रथम जल में ही एक दूसरी जीवन-शाखा चली। यह आरम्भ में अमीबा (Amoeba = एक कोश का प्राणी) की भाँति के सूक्ष्म जलजन्तु हुए। धीरे-धीरे जलीय कीट, मछली, मेंढक, कछुआ, वराह, रीछ, बन्दर, वनमानुष आदि विभिन्न प्राणिस्तरों को पार करता तथा विकसित होता हुआ मनुष्य बन गया। उस आदिकालीन एक कोश के प्राणी से मनुष्य तक पहुँचने के लिए मध्य में जीवन के न जाने कितने स्तर पार किए गए, तब कहीं लाखों-करोड़ों वर्षों में मनुष्य इस रूप में आया।

इस विचार के अनुसार यदि हम मनुष्य की उत्पत्ति को एक करोड़ वर्ष पूर्व मानें और हैकल की 'History of Creation' के पृष्ठ २९५ में लिखी हुई प्राणियों की २१ कड़ियों के बाद मनुष्य की उत्पत्ति मानें और प्रत्येक कड़ी को एक करोड़ वर्ष का समय दें, तो प्रथम प्राणु की उत्पत्ति से मनुष्य की उत्पत्ति तक लगभग बाईस करोड़ वर्ष होते हैं। लोकमान्य तिलक के 'गीतारहस्य' में डॉक्टर गेडॉ (Gadaw) की साक्षी से लिखा है कि 'मछली से मनुष्य होने में ५३ लाख ७५ हज़ार पीढ़ियाँ बीतीं।' इतनी ही पीढ़ियाँ अमीबा से मछली होने में बीती होंगी अर्थात् अमीबा से आज तक लगभग एक करोड़ पीढ़ियाँ बीत चुकीं। कोई पीढ़ी एक दिन और कोई सौ वर्ष जीती है। यदि सबका औसत २५ वर्ष मान लें तो इस हिसाब से भी प्राणियों के प्रादुर्भाव को आज २५ करोड़ वर्ष होते हैं। यह तो निश्चित है कि पृथिवी के हो चुकने के करोड़ों वर्ष बाद प्राणी हुए और प्राणियों की उत्पत्ति से आज तक २५ करोड़ वर्ष हो गए। इस प्रकार यह अवधि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
विकासवादियों की लगाई गई अवधि (दस करोड़ वर्ष) से बहुत आगे निकल जाती है। ऐसी दशा में यह विकास समय की दृष्टि से कितना लचर है, यह स्पष्ट है।

आद्यकालिक प्राणिरचना को क्रमिक विकास-सिद्धान्त के आधार पर माननेवाले विद्वानों ने इस बात पर विचार किया है कि एकमात्र मूल से अनेक शाखा-प्रशाखाओं में बँटकर विभिन्न योनियों के रूप में जीवन कैसे पहुँच जाता है। उनका कहना है कि प्राणी की इच्छा और आवश्यकता ऐसी स्थितियाँ हैं, जो उसके विकास और परिवर्तन का विशेष कारण बनती हैं। भोजन के लिए प्रयत्न तथा प्राकृतिक संघर्षों एवं शत्रुओं से रक्षा के लिए प्राणी को अनेक परिवर्तनों में से गुज़रना पड़ा है। उनमें से जो अपने को प्रकृति के अनुकूल बनाने में सफल हो सके वे बच गए। जो उन संघर्षों में अपने को आवश्यकतानुसार परिवर्तित न कर सके, एवं जीवन की रक्षा में असमर्थ रहे, वे नष्ट हो गए। इन्हीं कारणों से शरीरों में धीरे-धीरे परिवर्तन होता रहा और प्राणी विभिन्न योनियों के रूप में बँट गया। आधुनिक विकासवाद के अनुसार प्राणी के क्रमिक विकास में उसकी आवश्यकताजन्य इच्छा और उसको पूरा करने के लिए किए गए चिरकालीन अभ्यास के परिणामस्वरूप होनेवाले आकृति-परिवर्तन के उदाहरण के रूप में अफ्रीका के मरुप्रदेशों में पाए जानेवाले लम्बी गर्दनवाले जिराफ़ नामक पशु का उल्लेख किया जाता है। कहते हैं, यह पहले ऐसा नहीं था, जैसा आज देखा जाता है। जिराफ़ ने जब वृक्षों पर नीचे के पत्ते खा लिये तो ऊपर के पत्ते खाने की इच्छा हुई। अपनी इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए वह गर्दन उठा-उठाकर ऊपर के पत्ते खाने का प्रयत्न करने लगा। चिरकाल तक ऐसा करते रहने से उसकी गर्दन लम्बी हो गई। परन्तु बकरी जब नीचे के पत्ते चुग लेती है तब तने पर या टहनियों पर अगले पैर रखकर ऊपर के पत्ते चुग लेती है। लाखों वर्षों से वह इसी तरह अपना पेट भरती आ रही है। जहाँ उसके पैर नहीं पहुँच पाते, जिराफ़ की तरह वहाँ के पत्ते वह भी खाना चाहती है, परन्तु आज तक न उसकी गर्दन बढ़ी है, न उसका अगला भाग लम्बा हुआ और न उसके लिए चारे की कमी हुई। यहाँ यह भी विचारणीय है कि गर्दन बढ़ाने की बजाय जिराफ़ में बन्दर की तरह पेड़ पर चढ़ने की प्रवृत्ति का विकास क्यों नहीं हुआ?

परिस्थिति के अनुरूप आवश्यकतावश आकृति-परिवर्तन की मान्यता अन्यथा भी युक्तियुक्त नहीं है। न जाने कब से मनुष्य उत्तरी ध्रुव तथा ग्रीनलैण्ड जैसे हिमप्रधान प्रदेशों में बसा हुआ है, किन्तु शीत से बचने की इच्छा और आवश्यकता के होते हुए भी उसके शरीर पर रीछ जैसे बाल पैदा नहीं हुए। इतना ही नहीं, जैसे लम्बे बाल राजस्थान की तपती मरुभूमि में रहनेवाली भेड़ के होते हैं, वैसे ही हिमालय के शीतप्रधान प्रदेश में रहनेवाली भेड़ के होते हैं। अफ्रीका के अत्युष्ण प्रदेशों में दीर्घरोमा रीछ और रोम-रहित गैंडा एकसाथ रहते हैं। अपने ही देश में एक-जैसी परिस्थिति में रहनेवाली गाय और भैंस में अन्तर देखा जाता है। भैंस का चर्म पतला, चिकना और लघुरोम होता है। इसके विपरीत गाय का चर्म अपेक्षाकृत कठोर और रोमबहुल होता है। विकासवाद के अनुसार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्मरक्षा की भावना के कारण हरिण, चीतल, नीलगाय आदि अनेक प्रकार के जंगली पशुओं में नर के सींग होते हैं, मादा के नहीं। क्या आत्मरक्षा के लिए सींगों की आवश्यकता नर को ही होती है, मादा को नहीं? जंगली पशुओं की अपेक्षा मनुष्य द्वारा पालित व सुरक्षित गाय-भैंस आदि को कम खतरा होता है। फिर क्या कारण है कि उनमें नर और मादा दोगों के सींग होते हैं।

भाई और बहन एक ही परिस्थिति में उत्पन्न होते और बढ़ते हैं; परन्तु बहन के मुँह पर दाढ़ी-मूँछ का नाम भी नहीं होता। हाथी और हथिनी एक ही परिस्थिति में रहते हैं; पर हथिनी के मुँह में बाहर को निकले बड़े दाँत नहीं होते। मोर और मयूरी और इसी प्रकार मुर्ग़ा और मुर्ग़ी एक ही परिस्थिति में उत्पन्न होते, पलते और बढ़ते हैं; पर मयूरी और मुर्ग़ी के वे सुन्दर पर व कलग़ी नहीं होते जो मोर और मुर्ग़े के होते हैं।

भारत में व्याघ्र, सिंह व हाथी होते हैं, पर वे इंग्लैण्ड आदि कई देशों में नहीं होते। जिराफ़ अफ्रीका में, कंगारू आस्ट्रेलिया में और मोर भारत में होता है। यूरोपवासियों के द्वारा वहाँ पहुँचाये जाने से पहले आस्ट्रेलिया में खरगोश नहीं होता था। स्पष्ट है कि जब तक कोई प्राणी कहीं न पहुँचे और तत्पश्चात् अपनी सन्तति का विस्तार न करे, तब तक कोई प्राणी आप-ही-आप वहाँ पैदा नहीं होता।

मनुष्य को छोड़कर जितने प्राणी हैं, पैदा होने से मृत्युपर्यन्त उनके बालों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। जो गाय जिस रंग की पैदा होती है, आजीवन उसी रंग की रहती है; परन्तु न चाहते हुए भी मनुष्य के बाल रंग बदलते रहते हैं। जितने पशु हैं, पानी में डालते ही तैरने लगते हैं। मनुष्य का तथाकथित पूर्वज बन्दर भी पैदा होते ही तैरने लग जाता है। यहाँ तक कि राजस्थान की वह भैंस भी जिसने जीवन में तालाब के दर्शन भी कभी नहीं किए होते, अवसर मिलने पर झट तैरने लगती है, परन्तु मल्लाह का बेटा भी तैरना सीखे बिना नहीं तैर सकता। प्राणिमात्र में आत्मरक्षा की प्रवृत्ति स्वाभाविक है। यह प्रवृत्ति पतंगे में भी होनी चाहिए। दीपशिखा के सम्पर्क में आते ही वह जल जाता है. न जाने कब से जलता आ रहा है, परन्तु उसने कभी भी उससे बचने का प्रयास नहीं किया। इसके लिए उसे कोई विशेष प्रयत्न भी अपेक्षित नहीं होता। दीपशिखा से तनिक दूर रहने का अभ्यासमात्र करना था; किन्तु लाखों-करोड़ों वर्षों में वह इतना भी नहीं कर पाया।

मनुष्य को विकासक्रम में अन्तिम—सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। तब भी मनुष्य की तुलना में चींटी जैसे क्षुद्र प्राणी को वर्षा का तथा कुत्ते जैसे निकृष्ट प्राणी को भूकम्प का पूर्वानुमान कैसे हो जाता है? प्रशासनिक योग्यता की दृष्टि से मधुमक्खी को आदर्श क्यों माना जाता है? प्रत्येक प्राणी अधिक-से-अधिक काल तक जीना चाहता है। विकास के किसी भी स्तर पर उसने इस इच्छा का परित्याग नहीं किया होगा। तब मनुष्य की अपेक्षा कहीं निम्न स्तर के प्राणी कछुआ, साँप आदि क्यों दीर्घजीवी होते हैं? थोड़े काल में अधिक मार्ग तय करने के लिए मनुष्य मोटरों और वायुयानों का आविष्कार और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विकास कर रहा है; तब उसने चीते की तेज़ गति को छोड़ना कब चाहा होगा? कुत्ते की घ्राणशक्ति और गृध्र की दूरदृष्टि को भी उसने जान-बूझकर कभी खोना नहीं चाहा होगा। अनुपयोगी जानकर उसने उसकी उपेक्षा कर दी होती तो आज चोरों को पकड़ने के लिए मनुष्य को उसपर निर्भर होना क्यों पड़ता?

बया नामक छोटी-सी चिड़िया जैसा सुन्दर घर बनाती है, वैसा मनुष्य से केवल एक पीढ़ी नीचे माना जानेवाला बन्दर नहीं बना सकता। पर, यह भी सत्य है कि जैसा घर वह लाखों-करोड़ों वर्ष पहले बनाती थी, आज भी वैसा ही बनाती है। मकड़ी जाला बनाती है। मधुमक्खी छत्ता बनाती है और फूलों से पराग लाकर उससे मधु बनाकर उसमें एकत्र करती है। किन्तु इन्होंने ये कलाएँ किसी से सीखी नहीं—ये उनके अपने आविष्कार भी नहीं हैं। उन्होंने अपनी ये कलाएँ अन्य प्राणियों को भी नहीं सिखाई। जिसको जो और जैसा आता है, वह उसे उसी रूप में करता आ रहा है।

लामार्क नामक विद्वान् ने चूहों की दुमें काट-काटकर बिना दुम के चूहे पैदा करना चाहा। चूहों की अनेक पीढ़ियों तक वह ऐसा करता रहा, पर बिना पूँछ के चूहे पैदा न हुए। हिन्दुओं के लड़के-लड़कियाँ लाखों वर्षों से कान छिदवाते आ रहे हैं; हज़रत इब्राहीम के समय से यहूदी और मुसलमान ख़तना कराते आ रहे हैं; चीनी स्त्रियाँ न जाने कब से पैर छोटे करने का प्रयास कर रही हैं; परन्तु न हिन्दुओं के घरों में कनछिदे बच्चे पैदा हुए, न मुसलमानों के यहाँ ख़तना की हुई सन्तान पैदा हुई और न चीनी घरों में छोटे पैर की लड़कियाँ पैदा हुईं।

मोटर आदि का विकासक्रम में उपलब्ध अन्तिम रूप (latest Model) ही बनता है। जब मनुष्य-जैसा सर्वोत्कृष्ट प्राणी तैयार हो गया तो निचले स्तर के सभी पशु-पक्षियों का सर्वथा लोप हो जाना चाहिए था; परन्तु हम देखते हैं कि आज भी मछली से मछली, भेड़ से भेड़ और कुत्ते से कुत्ते ही पैदा हो रहे हैं। यहाँ तक कि जिस बन्दर से विकसित होकर मनुष्य बना कहा जाता है, उससे भी बन्दर ही पैदा हो रहे हैं, मनुष्य नहीं। फिर विकास तो विकास है। उसकी कोई अन्तिम सीमा नहीं आ सकती; तो फिर विकास का क्रम रुक कैसे गया? मनुष्य से आगे अन्य कुछ क्यों नहीं बना?

इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण दिए जा सकते हैं जो विकासवाद द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त के व्यतिक्रम को स्पष्ट करते हैं। वस्तुतः जो योनियाँ जिस प्रकार की हैं, वे सदा से वैसी ही हैं और भविष्य में भी वैसी ही बनी रहेंगी। आवश्यकता, तन्मूलक इच्छा, अभ्यास एवं वातावरण या परिस्थिति के कारण उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन सम्भव नहीं। अत्यन्त प्रतिकूल प्राकृतिक परिस्थितियों में अनेक जातियाँ नष्ट भले ही हो जाएँ, पर उनमें ऐसा परिवर्तन नहीं हो सकता जो उनकी नैसर्गिक जाति को बदल डाले। इन सब बातों से प्रमाणित होता है कि आदिम मनुष्यों ने हीन-मस्तिष्क प्राणियों से विकसित होकर उन्नति नहीं की, प्रत्युत वे परमात्मा की विशिष्ट मौलिक रचना थे और आज के उत्तम-से-उत्तम मस्तिष्कों की अपेक्षा अधिक उन्नत एवं विकसित थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञान कहता है कि सर्वप्रथम एक कोश का प्राणी हुआ; पर इस समस्या का समाधान विज्ञान आज तक नहीं कर पाया कि वह एक कोश का प्राणी कैसे हो गया? अमीबा नाम का प्राणी जो एक कोश का देह है, ठीक वही देह अनेकानेक संख्या में मिलकर अन्य अनेक कोशयुक्त प्राणी-देह की रचना करते हैं, ऐसा विज्ञान के लिए भी सिद्ध करना कठिन है। यदि एक कोश का प्राणी आप-ही-आप उत्पन्न हो सकता है तो मनुष्य भी आप-ही-आप उत्पन्न हो सकता है। अन्यथा जिस अन्तर्व्याप्त शक्ति के प्रभाव से एक सेल् का अमीबा उत्पन्न हो सकता है, उसी शक्ति से मनुष्य-शरीर की रचना होने में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं हो सकती। वनस्पतिशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त विद्वान् डॉ० बीरबल साहनी से पूछा गया—"आप कहते हैं कि आरम्भ में एक सेल् के जीवित प्राणी थे, उनसे उन्नति करके बड़े-बड़े प्राणी बन गए। आप यह भी कहते हैं कि आरम्भ में बहुत थोड़ा ज्ञान था, धीरे-धीरे उन्नति होते हुए ज्ञान इस अवस्था को पहुँच गया जिसको आज विज्ञान पहुँचा हुआ है। तब आप यह तो बताइए कि 'Where did life come from in the very beginning and wherefrom did knowledge come in the very beginning?' अर्थात् 'आरम्भ में जीवन कहाँ से आया और आरम्भ में ज्ञान कहाँ से आया?' क्योंकि जीवन शून्य से उत्पन्न हो गया और शून्य से ज्ञान उत्पन्न हो गया, यह नहीं माना जा सकता।" डॉ० साहनी ने उत्तर में कहा—"With this we are not concerned as to wherefrom life came in the very beginning or wherefrom knowledge came in the very beginning. We are to take it for granted that there was some life in the beginning of the world and there was some knowledge also in the beginning of the world and by slow progress it increased." अर्थात् 'इसके साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं कि आरम्भ में जीवन या ज्ञान कहाँ से आया। हम इस बात को स्वीकार करके चलते हैं कि आरम्भ में कुछ जीवन भी था और कुछ ज्ञान भी।' इससे स्पष्ट है कि जिस विकासवाद का इतना शोर है और जिसे अर्धशिक्षित जन अन्तिमित्थम् के रूप में मानते चले जा रहे हैं, युक्ति के सामने नहीं ठहर सकता।

सच तो यह है कि यद्यपि मानव में ज्ञान का विकास उसकी चिन्तनशक्ति के साहचर्य से होता है, तथापि जो कुछ ज्ञान वह प्राप्त करता है उसका आदिमूल वह स्वयं नहीं है। वेद की ध्वनि अपने आदिस्रोत परमेश्वर से निःश्वसित होकर परा, पश्यन्ती, मध्यमा मार्गों से होती हुई वैखरी के रूप में हमें प्राप्त हुई। जिन ऋषियों के माध्यम से वह हम तक पहुँची, वे उसके रचयिता न होकर अभिव्यंजकमात्र थे। अनादि काल से मनुष्य वेदरूपी ज्ञान के निरतिशय एवं अक्षयकोष से अपनी बुद्धि की ज्ञान प्राप्त करने की चेतना अपनी शक्ति के अनुसार ग्रहण करता आ रहा है।

यही स्थिति भाषा की है। भाषाविज्ञान के सभी विद्वान् स्वीकार करते हैं और यह सबके प्रत्यक्ष का विषय है कि मनुष्य भाषा का निर्माण नहीं करता; वह अपने पूर्वज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साधियों से ग्रहण करता है। वह भाषा को अर्जित करता है, सीखता है, बनाता नहीं। हम अपनी पहली पीढ़ी से सीखते हैं। हमसे पहली पीढ़ीवालों ने उस भाषा को अपने पूर्वजों से प्राप्त किया होगा। इस प्रकार प्रत्येक पीढ़ी अपने से पहली पीढ़ी से भाषा को ग्रहण करती है, किसी अपूर्व भाषा का निर्माण नहीं करती। इस क्रम को अतीत की ओर जारी रक्खा जाए तो प्रश्न होगा कि आदिमानव ने भाषा का अर्जन किससे किया होगा? उससे पहले तो कोई मानव-समाज था नहीं जिससे वह भाषा सीख सकता। जब यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि मानव द्वारा भाषा का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मात्र संक्रमण होता है, उसकी निर्माण करने में वह असमर्थ है, तब यही मानना होगा कि आदिमानव ने परमेश्वर (हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे) से ही भाषा का ग्रहण किया होगा। किञ्च भाषा न केवल शब्द का नाम है, न केवल अर्थ का, अपितु एक नियत अर्थ के साथ सम्बद्ध शब्द का नाम भाषा है। शब्द का अर्थ के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए, दूसरे शब्दों में भाषानिर्माण के लिए, पहले एक भाषा का होना आवश्यक है--उसके बिना मनुष्य भाषा का निर्माण या विकास नहीं कर सकता। इस प्रकार की भाषा बीजरूप सत्यविद्याओं के समान ईश्वर से ही प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार ईश्वर से प्राप्त होनेवाला ज्ञान शब्दमय वेद ठहरता है। ज्ञान की परत्र संक्रान्ति शब्द के बिना नहीं हो सकती। वास्तव में भाषा और ज्ञान का समवाय-सम्बन्ध है। एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। तारापुरवाला ने 'Elements of the Science of Language' में ठीक लिखा है—"As soon as a man begins to think, i.e., to have concepts, he must have a language." तारापुरवाले का अनुमोदन करते हुए मानवविज्ञानशास्त्री (Anthropologist) R. R. Marett ने लिखा है—"If language is ultimately the creation of intellet, yet hardly less fundamentally is the creation of language." (Anthropology, p. 130) इस प्रकार आदिमानव को बीजरूप में ज्ञान तथा भाषा का परमेश्वर से प्राप्त होना ही युक्तिसंगत है।

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती कृत 'दीप्ति' से

दीप्ति:—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

विमर्शापेक्षी विविध विषयों की प्रकाशिका

अनेक विषय हैं जिनपर आर्यसमाज में विभिन्न स्तरों पर समय-समय पर विचार होता आया है परन्तु वे आज तक विवादास्पद बने हुए हैं—उन्हें गंभीरतापूर्वक विचारकर निर्णय के तट पर पहुंचाने का प्रयास किया गया है।

मूल्य : ८०.०० रु०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे प्रकाशन

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

आनन्द गायत्री कथा	१४.००
एक ही रास्ता	१४.००
शंकर और दयानन्द	८.००
मानव जीवन-गाथा	१४.००
सत्यनारायण व्रत कथा	६.००
भक्त और भगवान	१२.००
उपनिषदों का सन्देश	१८.००
घोर घने जंगल में	२२.००
मानव और मानवता	३२.००
प्रभु मिलन की राह	२२.००
यह धन किसका है ?	२२.००
बोध-कथाएँ	२०.००
दो रास्ते	१७.००
दुनिया में रहना किस तरह	१७.००
तत्त्वज्ञान	२२.००
प्रभु-दर्शन	१७.००
प्रभु-भक्ति	१२.००
महामन्त्र	१४.००
सुखी गृहस्थ	७.००
त्यागमयी देवियाँ	९.००
महात्मा आनन्द स्वामी (जीवनी)	२५.००

MAHATMA ANAND SWAMI

Anand Gayatri Katha	30.00
The Only Way	30.00
Bodh Kathayen	40.00
How To Lead Life?	30.00

महर्षि दयानन्द

व्यवहारभानु	४.००
स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश	१.५०
आर्योद्देश्यरत्नमाला	१.५०
पंचमहायज्ञ विधिः	८.००

ब्र. जगन्नाथ पथिक

सन्ध्या योग ब्रह्म साक्षात्कार (वैदिक सन्ध्या से आलोक-प्राप्ति की पद्धति)	१२५.००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

सत्यार्थ प्रकाश (आधुनिक हिन्दी रूपान्तर)	१२५.००
महाभारतम् (तीन खण्ड)	६००.००
वाल्मीकि रामायण	१७५.००
षड्दर्शनम्	१५०.००
चाणक्यनीति दर्पण	६०.००
विदुरनीतिः (हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी)	४०.००
ब्रह्मचर्य गौरव	९.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	९.००
कुछ करो कुछ बनो	१२.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१२.००
आदर्श परिवार	१८.००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	२५.००
वैदिक विवाह पद्धति	१५.००
ऋग्वेद सूक्ति सुधा	२५.००
अथर्ववेद सूक्ति सुधा	१५.००
सामवेद सूक्ति सुधा	१२.००
ऋग्वेद शतकम्	१०.००
यजुर्वेद शतकम्	१०.००
सामवेद शतकम्	१०.००
अथर्ववेद शतकम्	१०.००
भक्ति संगीत शतकम्	६.००
चमत्कारी औषधियाँ	१५.००
घरेलू औषधियाँ	१५.००
चतुर्वेद शतकम् (सजिल्द)	५०.००
स्वर्ण पथ	१२.००
प्रभात-वन्दन	८.००
प्रार्थना-प्रकाश	८.००
शिवसंकल्प	८.००
प्रार्थना लोक (सजिल्द) (प्रभात-वन्दन, प्रार्थना-प्रकाश व शिवसंकल्प एकसाथ)	४०.००
वेद सौरभ	१२.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आचार्य उदयवीर शास्त्री

न्यायदर्शन भाष्य	१५०.००
वैशेषिकदर्शन भाष्य	१५०.००
सांख्यदर्शन भाष्य	१२५.००
योगदर्शन भाष्य	१००.००
वेदान्तदर्शन भाष्य (ब्रह्मसूत्र)	१८०.००
मीमांसादर्शन का विद्योदय भाष्य	३५०.००
सांख्यदर्शन का इतिहास	२५०.००
सांख्य सिद्धान्त	२००.००
वेदान्तदर्शन का इतिहास	२००.००
प्राचीन सांख्य सन्दर्भ	१००.००
वीर तरंगिणी (लेखों का संग्रह)	२५०.००

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

दीप्तिः	८०.००
आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे	४०.००
सृष्टि विज्ञान और विकासवाद	४०.००
वेद मीमांसा	प्रेस में

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

शतपथ ब्राह्मण (तीन खण्ड)	प्रेस में
सन्ध्या : क्या, क्यों, कैसे	१५.००
विवाह और विवाहित जीवन	१८.००
जीवात्मा	४०.००

प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

ब्रह्मचर्य सन्देश	२५.००
वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	१५०.००

प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

वैदिक ज्ञान-धारा	८०.००
महात्मा हंसराज	६०.००
महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (४ खण्ड)	२४०.००
आर्य सूक्ति सुधा	१२.००

प्रो. नित्यानन्द पटेल

पूर्व और पश्चिम	३५.००
सन्ध्या विनय	६.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

बिखरे मोती	४०.००
कल्याण मार्ग का पथिक	प्रेस में
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (११ खण्डों में)	६६०.००
आर्य समाज के बीस बलिदानी	१५..००
श्याम जी कृष्ण वर्मा	२४.००
आर्य समाज विषयक साहित्य परिचय	२५.००

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ऋषि बोध कथा	१०.००
वैदिक धर्म	२५.००

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

ईश्वर का स्वरूप	प्रेस में
सहेलियों की वार्ता	२०.००

लेः देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय
अनुः पं. घासीराम

महर्षि दयानन्द चरित	२५०.००

क्षितीश वेदालंकार

चयनिका	१२५.००

पं. रामनाथ वेदालंकार

वैदिक मधुवृष्टि	६०.००

आ. प्रियव्रत वेदवाचस्पति

वेदोद्यान के चुने हुए फूल	५०.००

पं. चन्द्रभानु सिद्धान्ताभूषण

महाभारत सूक्ति सुधा	४०.००

डॉ. प्रशान्त वेदालंकार

धर्म का स्वरूप	५०.००

पं. विश्वनाथ विद्यालंकार

सन्ध्या रहस्य	२५.००

प्रो. रामविचार एम.ए.

आर्य समाज का कायाकल्प कैसे हो ?	४.००

पं. नन्दलाल वानप्रस्थी

गीत सागर	२५.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं. वीरसेन वेदश्रमी

याज्ञिक आचार संहिता ४५.००

वैदिक सम्पदा (वैदिक वाङ्मय के आधार पर मानवीय जीवन का विवेचन) १७५.००

नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रेरक बोध कथाएँ १५.००

पं. सत्यपाल विद्यालंकार

श्रीमद्भगवद्गीता १५.००

WORKS OF SVAMI SATYA PRAKASH SARASVATI

Founders of Sciences in Ancient India (Two Vols.) 800.00

Coinage in Ancient India (Two Vols.) 600.00

Geometry in Ancient India 350.00

Brahmgupta and His Works 350.00

The Critical, Cultural Study of Satapath Brahman In Press

Speeches, Writings and Addresses

Vol.I : VINCITVERITAS 150.00

Vol.II : ARYA SAMAJ : A RENAISSANCE 150.00

Vol.III : DAYANAND : A PHILOSOPHER 150.00

Vol. IV : THREE LIFE HAZARDS 150.00

चित्र

स्वामी दयानन्द (कुर्सी) १८" X २२" ३.००

स्वामी दयानन्द (आसन) १८" X २२" ३.००

स्वामी श्रद्धानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

गुरु विरजानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

पण्डित लेखराम १८" X २२" एक रंग ३.००

स्वामी दर्शनानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

गुरुदत्त विद्यार्थी १८" X २२" एक रंग ३.००

महात्मा हंसराज १८" X २२" एक रंग ३.००

स्वास्थ्य

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको उपलब्ध हों तो पुड़िया आदि की क्या जरूरत है।

घर का वैद्य—प्याज ७.००

घर का वैद्य—लहसुन ७.००

घर का वैद्य—गन्ना ७.००

घर का वैद्य—नीम ७.००

घर का वैद्य—सिरस ७.००

घर का वैद्य—तुलसी ७.००

घर का वैद्य—आँवला ७.००

घर का वैद्य—नींबू ७.००

घर का वैद्य—पीपल ७.००

घर का वैद्य—आक ७.००

घर का वैद्य—गाजर ७.००

घर का वैद्य—मूली ७.००

घर का वैद्य—अदरक ७.००

घर का वैद्य—हल्दी ७.००

घर का वैद्य—बरगद ७.००

घर का वैद्य—दूध-घी ७.००

घर का वैद्य—दही-मट्ठा ७.००

घर का वैद्य—हींग ७.००

घर का वैद्य—नमक ७.००

घर का वैद्य—बेल ७.००

घर का वैद्य—शहद ७.००

घर का वैद्य—फिटकरी ७.००

घर का वैद्य—साग-भाजी ७.००

घर का वैद्य—अनाज ७.००

घर का वैद्य—फल-फूल ७.००

घर का वैद्य—धूप-पानी १५.००

सभी पच्चीस पुस्तकें पाँच आकर्षक जिल्दों में भी उपलब्ध, कीमत ४५.०० रुपये प्रत्येक

घर का वैद्य (प्याज, लहसुन, गन्ना, नीम, सिरस)

घर का वैद्य (तुलसी, आँवला, नींबू, पीपल, आक)

घर का वैद्य (गाजर, मूली अदरक, हल्दी, बरगद)

घर का वैद्य (दूध-घी, दही-मट्ठा, हींग, नमक, बेल)

घर का वैद्य (शहद, अनाज साग-भाजी, फल-फूल, फिटकरी)

घर का वैद्य—धूप-पानी ४०.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालोपयोगी

हरिशचन्द्र विद्यालंकार

वैदिक शिष्टाचार ३.००

पं. रामगोपाल विद्यालंकार

दयानन्द चित्रावली २५.००
(अनेक बहुरंगी चित्रों से सुसज्जित)

ब्र. नन्दकिशोर

आचार्य गौरव ५.००

पं. नारायण स्वामी

प्राणायाम विधि २.५०

सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए.

नैतिक शिक्षा—प्रथम २.५०
नैतिक शिक्षा—द्वितीय ३.००
नैतिक शिक्षा—तृतीय ४.५०
नैतिक शिक्षा—चतुर्थ ५.५०
नैतिक शिक्षा—पंचम ५.५०
नतिक शिक्षा—षष्ठ ६.००
नैतिक शिक्षा—सप्तम ६.००
नैतिक शिक्षा—अष्टम ६.००
नैतिक शिक्षा—नवम ९.००
नैतिक शिक्षा—दशम ९.००

डॉ. देवव्रत आचार्य

योग शिक्षा-१ १२.००
योग शिक्षा-२ १०.००
योग शिक्षा-३ १०.००
योग शिक्षा-४ १०.००

कर्म काण्ड की पुस्तकें

आर्य सत्संग गुटका ४.००
पंचयज्ञ प्रकाशिका १०.००
वैदिक संध्या १.००
सामाजिक पद्धतियाँ (मदनजीत आर्य) १२.००
संध्या-हवन-दर्पण (उर्दू) ८.००

त्रिलोकचन्द विशारद

महर्षि दयानन्द ५.००
गुरु विरजानन्द ५.००
स्वामी श्रद्धानन्द ५.००
धर्मवीर पं. लेखराम ५.००
मुनिवर पं. गुरुदत्त ५.००
स्वामी दर्शनानन्द ५.००

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

महात्मा हंसराज ४.५०
स्वामी स्वतन्त्रानन्द ४.५०
महात्मा नारायण स्वामी ५.५०
देवतास्वरूप भाई परमानन्द ५.५०

सुनील शर्मा

हमारे बालनायक ९.००
देश के दुलारे ९.००
हमारे कर्णधार ९.००

नीरू शर्मा

आदर्श महिलाएँ १०.००

स्वामी दर्शनानन्द

कथा पच्चीसी ९.००
बाल शिक्षा २.५०

नरेन्द्र गुप्ता

सच का फल ८.००
(कथाएँ उपनिषद की)

डॉ. मनोहर लाल

जीने का सही ढंग (प्रेरक बोध कथाएँ) ८.००

डॉ. कृष्ण वल्लभ पालीवाल

वैदिक राष्ट्रीय ऋचाएँ १२.००

जीवनी

महात्मा आनन्द स्वामी (उर्दू) १०.००

आ. उदयवीर शास्त्री

आचार्य शंकर का काल १०.००

पं. बा. विष्णुदयाल (मॉरीशस)

वेद भगवान बोले १५.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नैतिक जागरण

नैतिक व्यवहार से चरित्र की पहचान बनती है। यदि हमारे व्यवहार में सदाचार और शिष्टाचार का भाव होगा तो हमारी सब प्रशंसा करेंगे, हमें जीवन जीने की सही राह मिलती जाएगी। हम समाज को नैतिकता की ओर ले जाने में सहायक होंगे, तथा स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकेंगे।

नैतिक शिक्षा का उद्देश्य है-सत्य, निर्भयता, विवेक, संयम, नम्रता, मधुर भाषण, सेवा-भाव, व्यवहार-कुशलता, अहिंसा आदि गुणों का विकास कर बालक-बालिकाओं का निर्माण करना।

विश्वास है सरल भाषा, रोचक शैली तथा सीखभरी बातों से भरी यह पुस्तक पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

सफल जीवन (नैतिक जागरण)	१०.००
सच्चा सुख "	१०.००
सेवा के वरदान "	१०.००
मन की उड़ान "	१०.००
आनन्द के स्रोत "	१०.००
माँ का ऋण (शिष्टाचार की कहानियाँ)	१०.००
मौन का फल (सदाचार की कहानियाँ)	१०.००

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज : एक चिन्तन

सम्पादक—**अशोक**

कुछ वर्ष पूर्व १९८९ में डा० प्रशान्त वेदालंकार द्वारा आयोजित आर्यसमाज का बुद्धिजीवी सम्मेलन हुआ था, जिसमें आर्यसमाज और आर्ष शिक्षा-प्रणाली की निर्बलताओं को दूर करने और उन्हें सशक्त बनाने के बारे में विद्वानों-विचारकों ने गम्भीर विचार-विमर्श किया था।

अब उक्त सम्मेलन में प्रस्तुत विचारों को पुस्तकाकार प्रकाशित किया जा रहा है। इस ग्रन्थ में मोटे तौर पर सात भाग हैं—

१. गुरुकुल व आर्ष शिक्षा-प्रणाली : समस्याएं और समाधान
२. नयी शिक्षानीति : विश्वविद्यालय शिक्षा और आर्यसमाज
३. सामाजिक व राष्ट्रीय प्रश्न और आर्यसमाज
४. आर्यसमाज और राजनीति
५. आर्यसमाज संगठन : समस्याएं और समाधान
६. समापन, और
७. उपसंहार ।

इस तरह आप देखेंगे कि इसमें आर्यसमाज की सभी ज्वलन्त समस्याओं पर विचार किया गया है और उनके समाधान के कई तरीके भी सुझाए गए हैं जो प्रत्येक आर्यबन्धु को उद्वेलित करेंगे और विचारोत्तेजक सामग्री प्रदान करेंगे। इसलिए यह पुस्तक आर्यसमाज में रुचि रखने वाले हर व्यक्ति के लिए अपरिहार्य और अनिवार्य है और यह प्रत्येक आर्य की मेज पर होनी चाहिए। आर्यसमाज के प्रत्येक पुस्तकालय के लिए भी आप इसकी प्रतियां मंगायेंगे।

सुन्दर छपी हुई, बड़े आकार (पृष्ठ ३५०) की इस पुस्तक का मूल्य प्रचारार्थ अत्यल्प अर्थात् १२५.०० रुपये रखा गया है।

यह पुस्तक सितम्बर के अन्त तक छप कर तैयार हो जाएगी। आपका आदेश व राशि आज ही भेजकर रु० १००/- में प्राप्त करें।

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११००६

प्रकाशक-मुद्रक अजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिण्टर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi